IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

दलित चेतना का विमर्श - छप्पर उपन्यास

Dr. Pravinkumar P. Chauhan
Head, Department of Hindi and Assistant Professor
Shree Ambaji Arts College, Kumbhariya, Gujarat, India

भारतीय समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था, जाति, अश्पृश्यता, शोषण, दमन और उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष की लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया रही है। ईशा पूर्व गौतम बुद्ध के समय से आज तक अन्याय और वर्चस्व के विरुद्ध सामाजिक परिवर्तन के लिए धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन चलते रहे है। समय और काल परिवेश के दबाओ के फल स्वरूप यह दलित आंदोलन तीव्रता और ठहरावसे गुजरते हुए नया आकार ले रहा है। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को अग्रसर करते हुए आज दलित साहित्य भी वर्ण व्यवस्था के खिलाफ सशक्त आंदोलन रहा है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में विभिन्न विषयों मे साहित्य सृजन का प्रारम्भ हुआ। जिसमे दलित साहित्यने अपनी अलग पहचान बनाई। विभिन्न दलित साहित्यकारोने अपनी लेखनी से दलितो के जीवन को उनकी व्यथा, वेदना, करुणा, उत्पीड़न, शोषण, अन्याय, अत्याचार, जुल्म और मानवीय पीड़ाओको साहित्य के माध्यम से समाज के सामने लाने का प्रयास किया। जो काफी हद तक सफल रहा।

डॉ. जयप्रकाश कर्दम ने 'छप्पर' उपन्यास के माध्यम से समाज के पिछड़े वर्ग की कहानी कहने की कौशिश की गई है। उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव मातापुर की पृष्ठ भूमि पर लिखे गए इस उपन्यास का नायक चन्दन है। जो परिवर्तन की ज्योत जलता है। और उनके मातापिता के संघर्ष और उत्पीड़न को उपन्यास के माध्यम से समाज के सामने कर्दमजी ने चित्रित किया है। 'छप्पर' उपन्यास १९९४ में प्रकाशित हुआ। इस समय तक दलित संघर्ष पर हिन्दी में किसी दलित साहित्यकार की कोई सार्थक औपन्यासिक रचना नहीं आ पाई थी। 'छप्पर' उपन्यास में दलित आंदोलन के मूल्यों की स्थापना और उसके व्यावहारिक कार्यान्वियन है। इस उपन्यास में समाज के दलितो के विभिन्न प्रश्नों को जन्म दिया गया है। डॉ. तेजसिंह 'छप्पर' उपन्यास को एकसूत्री कार्यक्रम मानते है। डॉ. जयप्रकाश कर्दम के 'छप्पर' उपन्यास के केंद्र में लेखकने बदलाव की अभिलाषा प्रदर्शित की गई है। इस बदलाव में केवल एक मनुष्य को अपने सभी मानवीय अधिकारों के साथ साथ मनुष्य के रूप में स्थापित करने की कोशिश की गई हैं।

'छप्पर' उपन्यास का सूक्खा जो चन्दन का पिता है। वह चमार जाती का है। और वह किसान है। वह अपने पुत्र चन्दन को शहर में भेज कर पढ़ा लिखाना चाहता है। चन्दन की माता

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

रमिया अनेक सपने सजे हुए बैठी है। चन्दन शिक्षा के माध्यम से परिवर्तन लता है। सुक्खा और रमिया सामाजिक परिवर्तन मे जूटे अपने बेटे चन्दन को पूर्ण सहयोग देते है। सुक्खा चन्दन के भविष्य के प्रति आशावादी है। वह पत्नी रमिया के संदेह को दूर करते हुए कहता है की, "चुप रह पगली कोई पेट से बड़ा बनाकर आता है, पढ़ा लिखकर बड़े बनते है सब। क्या पता कल को हमारा चन्दन भी कलेक्टर या दारोगा बन जाए। अपनी चिंता छोड़ हमे थोड़े दुख उठाने पड़ रहे है। तो क्या ? दुख बाद ही सुख आता है। हमारे दिन भी कभी न कभी बहरंगे है।"[1] समसामयिक सामाजिक व्यवस्था चन्दन की शिक्षा मे बाधा उत्पन्न करना चाहते है। काणे पंडित और हरनाम ठाकुर दोनों मिलकर सुक्खा को त्राहित कर चन्दन को वापस बुलाने के लिए काफी प्रयत्न करते है। चोपल पर भरे पंचायत मेन सुक्खा के लिए अन्यायकारी फेसला किया जाता है। "सुक्खा को खेत-क्यार मे घुसाने न दिया जाय। न उसे किसी डौले-चक रोड से घास खरीदनी दी जाए और लाई-पताई या मजदूरी के लिए बुलाया जाय। अब देखते है की कैसे पढ़ाता है सुक्खा अपने बेटे को।"[2]

'छप्पर' उपन्यास दलितों के जीवन संघर्षो को दर्शाता है। 'छप्पर' उपन्यासमे दलितो की उस पीढ़ी की संघर्ष गाथा है जिसके लिए सिकसा संस्थानो के द्वार खुलना एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक घटना थी। मुक्ति संघर्ष यात्रा का पहला पड़ाव भी। जहां उन्होने नए, अनचाहे परिवेश को देखा, जाना और परखा। जिसके फल स्वरूप उनके भीतर खुद का रास्ता चुनने का कर्तव्य बोध और हौंसला जागा। 'छप्पर' उपन्यास की औपन्यासिक कथा उन लोगों के दूरदमय जीवन की जिजीविषा अपने कलेवर मै समेटे हुए हैं। "जो दलित और दरिद्र हैं, उनके पास रहने-सहने तथा एकाध पशु हैं। जो वह पलटे हैं, उन सबके लिए कुल जमा गारा-मिट्टी की दीवारों पर घासफूस के छप्पर है या ज़ोपड़ियों हैं इकक्षति, दुच्छत यही तक सीमित हैं। उनकी साधन संपन्नता।"

पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक विपन्नता के बाद भी सुक्खा अपने एक लौटे बेटे को पढ़ने के लिए शहर भेजता हैं। तमाम दबावो के बीच मैं भी सुक्खा के मन मैं हौंसला बुलंद रहता हैं। हताश और निराशा के क्षणों में भी सुक्खा अपनी पत्नी का धैर्य बढ़ता हैं।

"एक दिन
तुम्हारी संताने तुमसे पुछेगी
तुमने हमे क्यों पैदा किया
यदि नहीं लड़ सकते थे तुम
अपने अधिकारो की लड़ाई"[3]

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

डॉ. कर्दम ने 'छप्पर' उपन्यास मैं दलित जीवन मैं व्याप्त गरीबी, मजबूरी एवं दु:खद लाचारी पूर्ण जीवन को बताया हुआ हैं। उसमे रमिया एवं सूक्खा जीवनभर दुख और दर्द भरी जिंदगी गुजारते है। इस उपन्यास के अनुभव द्वारा संसार से बहस कराते हुए ऐसा महसूस होता है की हिन्दी उपन्यास को भारत की आज़ादी के बाद समानता, स्वतन्त्रता एवं बंधुता के संवैधानिक मूल्यों के परिपेक्ष्य में सामाजिक संरचना के सृजनात्मक साहित्य की जमीन तलाश है। वह जमीन जिसमे रोमानी, जागरण, क्रांतिकरीता और चंद किताबे पढ़कर पैदा संघर्ष चेतना के बजाय मानवीय भावों और एहसासों का जीवंत संस्पर्श हो और जिस जमीन पर खड़े होकर आत्मीय और भावनात्मक प्रसंगो की पृष्ठ भूमि मैं अपनी समाज के तीखे-से-तीखे सामाजिक संस्कृतिक सवालो के संधन को खोजने का उपक्रम किया जा सकता हैं। इस लेखन मैं क्षणिक आवेशजन्य क्रांतिकारिता के आग्रहवश बंधु एवं भाव प्रेम को तो जैसे वर्जित क्षेत्र मन लिया गया हैं। परंतु इस उपन्यास मैं लेखक ने इस कथन को बहुत ही संयत विवेक के साथ उठाया गया हैं। और इसके सारे पात्र षडयंत्र की बनावट हैं। परंतु चन्दन की अगुनाई में सामाजिक बदलाव के शुरू हुए आंदलन की व्यापक प्रतिकृया समाज पर होती हैं।

"आज नहीं तो कल जरूर
ये भूखी मानवता जागेगी,
अपनी सारी महेनत जागेगी,
अपनी सारी महेनत का
तुमसे जरूर हिसाब मांगेगी।"[4]

दलित उत्पीड़न मैं समाज की संरचना वर्गिकरण और वर्गो के आधार पर किए गए दायित्वों के बटवारों की भेदभावपूर्ण पृष्ठभूमि हैं। भारतीय समाज में वर्गो के विभाजन के अनेक सोपान हैं। व्यापार, व्यवसाय एवं रुचि के आधार पर अलग-अलग वर्गो का विनियास हुआ हैं, जिसमे व्यापार, व्यवसाय एवं रुचि के आधार पर विकसित वर्ग रूढ नहीं हैं। जबकि धर्म के आधार पर विकसित वर्ग के स्वयं संचालित कायदे कानून हैं। प्रेमचंद की कहानी 'ठाकुर का कुआँ' में जोखूं का कथन - "पंडितजी आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे और साहूजी एक के चार लेंगे, गरीब का दुख दर्द कौन समजता हैं।"[5]

डॉ. आंबेडकर के "पढ़ो, संगठित बनो और संघर्ष करो" इस सूत्रो के अनुसार दलित शिक्षा के महत्व को समझाया गया हैं। इस 'छप्पर' उपन्यास मैं डॉ। कर्दमजी के सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिकार कराया गया हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

"आडी-तिरछी रेखाओ में,
हथियारो की ही निशानी हैं,
खुखरी हैं, बम हैं असि भी
गंडासा भाला प्रधान,
दिल ने कहा, दलित माँओ के
सब बच्चे बागी हो,
अग्निपुत्र होंगे,
विप्लव मैं सहभागी होंगे।"[6]

'छप्पर' के अंबेडकरी दर्शन के अनुकूल महान कृति है। क्योंकि इसका पात्र शुरू से अंत तक अपनी सामाजिक जिम्मेदारियो के साथ आत्मविकास का समर्थन करता हैं। और शिक्षा से उच्च शिक्षा की और बढ़ा हैं, लोगो कों ज्ञान बाँटता चलता हैं। श्री कर्दमजी के साथ दो परिस्थितियाँ इस कथानक के अनुकूल हैं। एक तो वह स्वयं उच्च शिक्षा एवं सृजन की और अग्रसर हैं। दूसरी और सामाजिक जीवन से गहराई तक जुड़े हुए हैं और यह पात्रो इस कथावस्तु के साथ उपन्यास का जीवन भी हैं।

अंत मे निष्कर्ष के रूप मैं डॉ. जयप्रकाश कर्दम ने सच्ची मानवता को स्थापित करने हेतु इस उपन्यास की रचना करके एवं अनेक उच्च विचारो से हिन्दी साहित्य गौरव प्राप्त कर रहा हैं।

संदर्भ सूचि

[1].छप्पर, जयप्रकाश कर्दम, पृ. 13
[2].छप्पर, जयप्रकाश कर्दम, पृ. 35
[3].दलित साहित्य की वैचारिकी और डॉ. जयप्रकाश कर्दम, शिलाबोधि, पृ.121
[4].हिन्दी साहित्य मैं दलित अस्मिता. डॉ. कालीचरण 'स्नेही', पृ. 107
[5].डॉ. जयप्रकाश कर्दम दलित अभिव्यक्ति संवाद और प्रतिवाद. रुपचन्द गौतम, पृ.14
[6].हिन्दी साहित्य मैं दलित अस्मिता. डॉ. कालीचरण 'स्नेही', पृ. 108